cation of the authorised versions thereof. It is not possible to state the specific time within which the authorised versions of these enactments and rules will be completed and published.]

CALLING ATTENTION TO MATTERS OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

It Unsatisfactory position in regard to the rehabilitation of the people of Khemkaran in Punjab

SHRI JAGAT NARAIN (Punjab): Sir, I beg to call the attention of the Minister of Labour, Employment and Rehabilitation to the unsatisfactory position in regard to the rehabilitation of the people of Khtm-karan in Punjab.

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF LABOUR, EMPLOYMENT AND REHABILITATION (SHRI D. R. CHAVAN): In Punjab 51,000 persons were uprooted from the border areas. Of this number 7,764 are from Khemkaran. Funds to the extent indicated below were sanctioned by the Central Government and placed at the disposal of the Punjab Government for providing relief and resettlement assistance to the displaced persons.

	Rs.
Relief	50,00,000
Resettlement	85,00,000

During the period Khemkaran remained under the occupation of Pakistan and during the course of the withdrawal of the Pakistan forces, it was subjected to systematic, wilful and wanton devastation. Almost all the pucca houses were destroyed and useful construction material such as girders, windows and door frames and in some cases even bricks were removed. All public buildings, including the Railway Station, Post Offices, Municipal Offices, the Police Post, the Library and schools were demolished. The railway line for a length of 5 miles was removed. All the wells were contaminated and the hand pumps were removed. All the trees in the orchards were felled and the timber taken away. The electric cables and telephone connections were removed. Further, the area around Khemkaran was heavily mined. With the completion of the demining operations in about the third week of April, the return of the uprooted persons - commenced.

To ameliorate the hardship of the uprooted persons, relief camps were set up where arrangements were made to provide food, shelter, clothing, bedding, medical assistance and other necessities of life to the displaced persons commensurate with their requirements. The expenditure on relief operations so far, has been Rs. 69,30,662.

In order to resettle the uprooted persons as early as possible and to ameliorate the hardship to which they have been subjected, Government has taken the following measures:—

(i) For the construction of pucca houses Government is giving a grant of Rs. 4,000 and a loan of Rs. 6,000. For the construction of a kucha house, Government is giving a grant of Rs. 1,000 and a loan of Rs. 2,000.

(ii) For the construction/repair of shops. Government is giving a grant of Rs. 500.

(iii) For the construction of about 170 shops-cum-godowns and shops in the grain Mandi of Khemkaran in addition to a grant of Rs. 500, Govt, is giving a loan of Rs, 3,000. The owners of these large establishments arc also being given a business loan upto Rs. 10,000.

(iv) In order to enable the agriculturists to resume their normal avocations as soon as possible, Govt, is giving loans for purchase of seeds, fertilizers and agricultural implements. To the non-agriculturists, including artisans, hawkers and professional people such as doctors, lawyers, etc., loans ranging from Rs. 200 to Rs. 5000 are being given to enable them to resume their previous avocations.

(v) As the moveback of the uprooted persons has recently started, it was felt that they would not have the requisite means to cultivate the land and avail of whatever was left of the Kharif sowing season. In order to utilize as much of the Kharif sowing season as possible, with the assistance of Associated Chambers of Commerce, 10 tractors

[Shri D. R. Charan] working on a double-shift basis have been put into operation in Khemkaran area. About 100 acres of land is being made fit for sowing everyday. About 1700 acres of land has already been sown. Arrangements have been made to supply adequate quantity of seeds and fertilizers to the farmers.

(vi) To enable the uprooted persons to maintain themselves till they are able to reap the Kharif harvest and till they have been able to resettle themselves in other avocations, *ex-gratta* Maintenance Allowances depending on the size of the family are being given.

(vii) A sum of Rs. 60,000 has been placed at the disposal of the Punjab Govt, for the restoration of water supply in areas which were occupied by Pakistan. So far 25 hand-pumps have been installed and 81 wells have been decontaminated and put into operation in Khemkaran area. In view of the measures detailed above on which an expenditure of Rs. 85,00,000 has already been incurred, it is apparent that the complaint to the effect that "Govt, is doing nothing for the rehabilitation of the people of Khemkaran in Punjab" is not based on a correct appraisal of facts and is misleading.

The latest report is that debris from all the main roads and streets of Khemkaran has been cleared. Clearance of debris from sites on which shops were located is well in hand and is expected to be completed in the next fortnight.

In Punjab 51,000 displaced persons were registered and relief assistance to all the displaced persons was provided. About 7,000 persons have returned to the original place of residence. A very large number of agriculturists go to their fields every day. People are gradually returning to Khemkaran, where till they can rebuild their houses temporary accommodation in tents is being provided. About a thousand persons are living in tents in Khemkaran. A dispensary, a school and a post office have been opened. The electric supply and the rail link have been restored. Govt, is taking all possible steps to expedite reconstruction of the buildings within the shortest possible time. Punjab Government has also taken steps to provide construction material at reasonable prices.

श्री जगत नारायण : जनाब, मैं कल खेमकरण में गया, वहां चार घंटे मैं रहा। वजीर साहब ने यह जो बयान दिया है कि सारी सड़कों से डेबरिस क्लीयर हो गई है ठीक नहीं है। परसों जब डिफेंस मिनिस्टर वहां तशरीफ ले गये थे तो वह बमुश्किल आधा फर्लांग जा सके। सारा बाजार, सारी गलियां डेबरिस से भरी हुई हैं। मैं वजीर साहब की नोटिस में लाना चाहता हूं, उनसे पूछना चाहता हूं, कि 30,000 रु० खर्च किया गया बाजार को साफ करने के लिये डेबरिस से। उसे साफ यों किया कि मकानों में डाल दिया, गलियों में डाल दिया और जब लोग मकान में गये तो उन्होंने उसे वहां बाजार में डाल दिया है, बाजार डेबरिस से भरी पड़ी है। वहां सिर्फ दो ट्रक काम कर रहे हैं और 50 आदमी वहां डेबरिस को साफ कर रहे हैं। मैं देख कर आया हूं, सिर्फ दो ट्रक हैं। उससे आप अंदाजा लगा सकते हैं कि आप 15 दिन कहते हैं लेकिन एक साल में भी वह डेबरिस वहां से नहीं उठाई जा सकती है।

जनाबवाला, वहां की हालत यह है कि एक मकान में आपको एक फिट लकड़ी या एक फिट लोहा भी नहीं मिलेगा। सारी खिड़कियां, सारा मकान, सारी छत वह तमाम उखाड़ कर ले गये हैं। और हालत यह है कि लोगों को तम्बू दिये हैं और लोगों ने उसे अपने मकानों के साथ-साथ लगा लिया है लेकिन अंधड़ जोर से आये तो तीन मंजिले मकान की दीवार यों ही खड़ी है, कोई सपोर्ट नहीं है, वह नीचे गिर सकती है। परसों वहां पर एक वाकया हुआ; एक दीवार गिर गई और एक बूढ़ी औरत को बड़ी चोट आई। इन्होंने कहा वहां अस्पताल खुल गये हैं, एक टेन्ट में एक डाक्टर बैठा हुआ है वह भी तीन घंटे ड्यूटी देता है, कोई दवाइयां नहीं है। उन्होंने कहा स्कूल खुल गये हैं पर वहां

कोई स्कूल नहीं खुला है, एक टेन्ट में सिर्फ एक मास्टर बैठा है जिसमें दस बच्चे बैठ सकते हैं। वहां पर हायर सेकेन्डरी स्कूल था, वहां पर लड़कियों का मिडल स्कूल था, मौलाना आजाद की वह अपनी जन्मभूमि थी, वहां बड़ी-बड़ी शानदार इमारतें थी, गुरुद्वारे थे, अब कोई इमारत वहां पर खड़ी नहीं है। इतनी डेबरिस है कि एक साल में साफ नहीं हो सकती है। जितनी स्कीमें बतायी हैं सब पेपर स्कीम हैं। वहां पर लोग मुझ से मिले। उन्होंने दर्खास्त की है कि आप जाकर पार्लियामेन्ट में साफ बतायें कि हमें दो महीने से राशन नहीं मिला है। दो महीने से जब से वे पटरियों से उठकर आए हैं, अप्रैल और मई का राशन नहीं मिला है, एक पाई नहीं मिली है, कोई फेयर प्राइस शाप वहां पर नहीं है, कोई सरकारी लकड़ी की दुकान वहां नहीं है, मकान बनाने की कोई फैसिलिटी जनाब वहां पर नहीं है। उन्होंने कहा देहात में ये ये इंतजाम कर रहे हैं। सिर्फ चार ट्यूबवेल्स वहां पर हैं वे भी अभी तक चालू नहीं हो सके हैं हालांकि पाकिस्तान के इलाके से कुछ नहीं तो 100 के करीब ट्यूबवेल वहां से उठाकर लाए हैं, इन्हीं को काम चलाने के लिये दे सकते हैं। तो इस लिहाज से खेमकरण का कस्बा कभी बस ही नहीं सकता है। एक साल तो लग गये उस डेबरिस को उठाने के लिये। फिर उनकी शिकायत है कि यह जो ग्रान्ट ये कह रहे हैं कि हम उनको दे रहे हैं, लाखों में बताया गया, तो सिर्फ दो फीसदी आदमियों को ग्रान्ट मिला है पिछले तीन महीने में। 3,000 वहां के मकान मालिक हैं, कर्जा एक को नहीं मिला है। मैं चैलेन्ज करता हूं ये बताएं कि एक आदमी को वहां कर्जा मिला है। नहीं मिला है। 3000 में से सिर्फ 200 को ग्रान्ट मिला है। आप बताइये इस सूरत में वह शहर कैसे बन सकता है, मैं जानना चाहता हूं वजीर साहब से। ये फैक्ट्स हैं, हमारे पास लोगों की शिकायतें लिखी हुई हैं। फिर यह हालत है जनाबेवाला कि वहां पर एक सरकारी बिल्डिंग नहीं बनी, रेलवे का दफ्तर भी तम्बू में चल रहा है, कोई वहां पर सरकारी मकान गवर्नमेन्ट ने बिल्ड नहीं किया है, बिल्ड करना शुरू ही नहीं किया है। वजीर तो वहां पर आपस में लगे हुए हैं चीफ मिनिस्टर बनने के लिये; चीफ मिनिस्टर चले गये, किसी को खेमकरण का क्या पता है। साइरन के वक्त उठकर बाहर चले आए।

THE MINISTER OF LABOUR, EMPLOYMENT AND REHABILITATION (SHRI JAGJIVAN RAM): Sir, 1 want to know whether it is a speech or question or clarification or what he is speaking. Sir, I want to understand from you what it is. Is it a speech or a clarification or a question or what is it that he is making?

श्री जगत नारायण : अभी कल चव्हाण साहब वहां गए थे, वहां अखबार में छपा है कि उनकी आंखें पुरनम हो गईं। उन्होंने कहा मैं जाकर प्रधान मंत्री को बताऊंगा कि जो शिकायतें हैं उनको किसी तरह से गवर्नमेन्ट दूर करेगी। मैं पूछना चाहता हूं ये बातें अगर फैक्ट्स हैं तो उन शिकायतों को कैसे दूर करेंगे।

श्री जगजीवन राम : सदस्य महोदय ने इस मौके से फायदा उठाया है। जो गुस्सा उन्हें पंजाब सरकार से है उसका इजहार उन्होंने यहां पर किया।

श्री जगत नारायण : यह पंजाब सरकार से नहीं है आपसे है।

श्री जगजीवन राम : उन्होंने कहा है जिसके लिए यह मौका नहीं था कि पंजाब के मंत्री अपने चुनाव के फेर में लगे हैं। उसका जिक्र करने से कोई आपका केस मजबूत नहीं हो जाता। लेकिन मैं यह कबूल करता हूं कि खेमकरण के लोगों के लिये जितना होना चाहिये था वह अभी नहीं हुआ है।

श्री डाह्याभाई व० पटेल (गुजरात) : कुछ नहीं हुआ है।

श्री जगजीवन राम : कुछ नहीं हुआ है यह तो आप हमेशा कहेंगे । आप अपनी बात सही मानेंगे और हमारी बात गलत मानेंगे। आप हमारी बात कबूल नहीं कर सकते हैं ।

श्री डाह्याभाई व० पटेल : बताइये क्या हुआ ?

(Interruption)

श्री जगत नारायण : मैं आपको दिखाऊंगा कि कुछ नहीं हुआ है ।

श्री जगजीवन राम : जी हां, आप कहेंगे कुछ नहीं हुआ है । 69 और 70 लाख कुछ नहीं होता है और वह भी आप कहेंगे वह बांटा नहीं गया है और कागज पर ही है । तो उसका जवाब मेरे पास नहीं है । मेरे पास जो जानकारी है, जो खर्चा हुआ है, वह आपके सामने पेश किया गया है । मैं मानता हूं, मेरी भी यह सूचना है कि अभी पूरा डेबरिस, मलवा, खेमकरण से नहीं उठाया गया है, इसमें दो रायें नहीं हैं । उसके लिये यत्न हो रहा है, आपने कहा वह नाकाफी है । इसके लिये हम कोशिश करेंगे कि काफी हो जाय । मकान वहां अभी तक नहीं बने हैं । किसी ने नहीं कहा, उन्होंने, डिप्टी मिनिस्टर ने भी नहीं कहा, कि इमारतें बन गई हैं । अभी इमारत बन नहीं सकती क्योंकि वहां पर माइन्स वगैरह जो साफ किये गये वे तो अप्रैल के दूसरे हफ्ते में साफ किये गये । इतनी जल्दी में मकान बनाने का काम शुरू ही कैसे हो सकता था जबकि दहशत बनी हुई थी कि कहीं न कहीं माइन पड़ी होगी, उसका विस्फोट हो सकता है । जब तक हमारी सेना की तरफ से यह आश्वासन नहीं मिल जाता कि यह इलाका अब बिल्कुल 'सेफ' कर दिया गया है, अब सिविलियन पापुलेशन वहां जा सकती है, तब तक वहां कोई जा ही नहीं सकता था । इसलिये हमने तो कहा ही नहीं कि कोई इमारत बन गई है । शामियाने में, तम्बू में, टेन्ट्स में अभी काम जारी कर दिया है लेकिन मैं यह दावा नहीं करता कि जो कुछ वहां पर हुआ है बिल्कुल संतोषजनक हो गया है, सैटिसफैक्टरी हो गया है । अब काम को तेजी से करने की जरूरत है और अभी परसों मैं लुधियाने में था और डिफेन्स मिनिस्टर वहां से होकर आए तो हम लोगों ने कुछ आपस में बातें कीं । इसके पहले भी जो कुछ वहां देने के लिये हमने तय किया है, मैंने महसूस किया कि यह काफी नहीं है और फाइनेन्स मिनिस्ट्री और सेक्रेटरीज के साथ ये बातें हो रही थीं कि तेजी से उस काम को कराने के लिये हायर स्केल में लोगों को मदद देने के लिए हमको रुपये का इन्तजाम करना है । लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूं कि आप वहां जाकर देखें । हमारे पास भी खेमकरण से पचास साठ लोग आए थे, उनकी काफी बड़ी परेशानी है; इसमें कोई शक नहीं और उन्होंने उस लड़ाई के जमाने में काफी बहादुरी का परिचय दिया था । उस जमाने में जब लड़ाई वहां चल रही थी उनकी बहादुरी के लिये हमें बराबर दाद देनी है । तो वे हमारे पास आए और उन्होंने कहा जो इमदाद आप दे रहे हैं वह नाकाफी है । मैंने कहा यह नाकाफी है लेकिन मैं आपसे आरजू करूंगा कि जो इमदाद मिल रही है उसको लेकर वहां पहुंच जाइये उन्होंने कहा सबसे बड़ा काम यह होगा कि आप हमारे लिए पानी का इंतजाम और जमीन जुतवाने का इंतजाम सबसे पहले कर दीजिए । तो पानी का इंतजाम सबसे पहले हमने किया, वहां पर ट्यूबवेल लगाए, कुओं को साफ कराया, कुओं से पानी देने का इंतजाम करवाया, उनकी जमीन को जुतवाने का इंतजाम करवाया जिससे वे नरमा की फसल लगवा सकें । उन्होंने कहा नरमा की फसल तैयार हो जायेगी तो हमारे ऊपर रिलीफ का जो खर्च हो रहा है वह कम हो जायेगा और अपने रिहैबिलिटेशन का काम भी हम कर सकेंगे । तो इस काम को हम तेजी से कराने में लगे हैं । जहां तक पानी पहुंच सकता है वहां तक के, खेत जल्द से जल्द जुतवा देंगे, दस ट्रैक्टर से काम हो रहा है । और ज्यादा ट्रैक्टरों की जरूरत होगी तो और भेजे जाएंगे । हम इस बात को

मानते हैं कि जितना उनके जीवन को सुखी बनाने के लिये, चीजों को मोहैय्या करने की बात है उसको तसल्लीबख्श तो मैं भी नहीं कहता लेकिन वहां जो स्थिति है उस स्थिति में जितना कर सकते थे उतना किया है। आपने शिकायत की है कि तम्बुओं में सब चीजें हैं; बात ठीक है, इमारत इतनी जल्द नहीं बनाई जा सकती। अस्पताल एक तम्बु में शुरू किया गया है, स्कूल तम्बू में शुरू किया गया है। मिडिल स्कूल अभी नहीं चालू किया जा सकता है और तम्बुओं का इंतजाम कर रहे हैं। यू० पी० सरकार से तम्बू आये हैं और दूसरी जगह से आए हैं। अभी जो रिलीफ कैम्प था उसको पट्टी से हटा रहे हैं। मकान बनाने के लिये सीमेन्ट का, ईंटों का, लोहे का, इंतजाम किया है। लकड़ी का भी इंतजाम किया है, लकड़ी की दुकानें खोल दी गई हैं; मैं नहीं कहता कि मैं देख आया हूं; मेरे पास जो सूचना है उसके आधार पर कह सकता हूं कि लकड़ी की दुकानें खुली हैं। आपने कहा, राशन लोगों को नहीं मिला। यह ताज्जुब की बात मालूम हुई; क्योंकि कैम्प में हट जाने के बाद यह तय किया गया कि जिस स्केल पर उनको रिलीफ के लिये 'डोल्स' मिलते थे उसकी बजाय कैश दिये जाय ताकि वे लोग जो काम शुरू नहीं कर पाए हैं अपना खर्च चला सकें। ये रकम एक या दो किश्त में वे लेंगे। किसान को 210 रु० से लेकर 575 रु० तक और दूसरों को 90 रु० से लेकर 225 रु० तक। यह उनके खर्च के लिये दिया जा रहा है जब तक उनकी खुद की आमदनी शुरू नहीं हो जाती। लेकिन जो आपने कहा कि 'लोन' किसी को मिल नहीं पाया है इस पर मुझे ताज्जुब है। मैं इसकी जांच करूंगा और देखूंगा क्यों नहीं मिल पाया है। आपने यह भी कहा किसी को लोन नहीं मिला है। यह भी मैं कह सकता हूं, आपको जो सूचना दी गई है वह सही सूचना नहीं है।

श्री जगत नारायण: बिल्कुल नहीं मिला। मैं ठीक कह रहा हूं। मैं कल वहां से होकर आया हूं। अफसरों ने बताया कि नहीं मिला।

श्री जगजीवन राम : वह फिगर्स आपको बता देता हूं कि कितने लोगों को दिया गया।

श्री जगत नारायण : मैं वहीं से होकर आया हूं। मैं आपको ठीक बता रहा हूं। यह कागजी कार्रवाई हुई है। जो आफिसर बांटने वाले हैं उन्होंने बताया कि लोन नहीं मिला, सिर्फ दो फीसदी को ग्रान्ट दी गई है।

श्री जगजीवन राम : इसमें तो मजबूरी हो जाती है। तो मैं देखूंगा हमारे पास जो सूचना दी गई है . . .

श्री जगत नारायण : जनाब इसका पता लगाएं, लोन के बारे में इन्क्वायरी करायें।

श्री जगजीवन राम : मैं कह रहा हूं कि हमारे लिये बहुत ही मुश्किल हो जाता है . . .

श्री सभापति : आप कितनी देर रहे ?

श्री जगत नारायण : मैं वहां 4 घंटे रहा।

श्री सभापति : तो आपने काफी बातें मालूम कर लीं।

श्री जगजीवन राम : मैं कह रहा हूं मैं पता लगाऊंगा और अगर गलत बात होगी तो उनको सजा दूंगा। बार-बार मेरी इस सूचना को चैलेन्ज किया जाय कि एक आदमी को भी लोन नहीं मिला है, एक को भी ग्रान्ट नहीं मिला है, जबकि मेरे पास सूचना मिली है।

श्री जगत नारायण : मैं ठीक कह रहा हूं। 2 फीसदी को ग्रान्ट मिला है। एक आदमी को लोन नहीं मिला है।

(Interruption)

श्री सभापति : बहस न कीजिए।

श्री जगजीवन राम : मैं तो कह सकता हूं मैं उन अफसरों को सजा दूंगा जिन्होंने झूठी सूचना दी होगी। अगर हमारी सूचना गलत

[श्री जगजीवन राम]

है तो इसका कोई रास्ता तो होना चाहिये। लेकिन जैसा मैंने पहले कहा कि जिस बहादुरी से वहां के लोगों ने कठिनाइयों का सामना किया उसकी जितनी तारीफ की जाय कम है। लेकिन इसके साथ ही साथ में यह भी कहना चाहता हूं कि अब भी वे जिस बहादुरी के साथ अपनी परेशानियों का मुकाबला कर रहे हैं वह काबिले तारीफ है और जब वे आये थे तो हमने देखा कि उनके चेहरे पर कोई शिकन नहीं थी।

श्री जगत नारायण : शिकन नहीं है, लेकिन वे मदद मांगते हैं।

श्री जगजीवन राम : मैं उनकी तारीफ करूंगा कि जितने लोग आये, वे परेशानी की हालत में आये, मजबूरी की हालत में आये और जिनके परिवार छिन्न-भिन्न हो गये थे। कोई कहीं रहता था, तो कोई कहीं रहता था, इस तरह की हालत में आकर भी वे अगर सरकार को और हमको गाली भी देते, तो मुझे बुरा नहीं लगता, लेकिन मैं उनकी तारीफ करूंगा कि इन सब परेशानियों के बावजूद भी उनकी देशभक्ति की भावना में थोड़ी भी कमी नहीं आई है। मैं इसको कबूल करता हूं कि जितना हमें उन लोगों के लिए करना चाहिये था उतना नहीं कर पाये हैं, लेकिन मैं यह अर्ज करूंगा कि इस बात को लेकर पंजाब सरकार पर छींटाकसी नहीं करना चाहिये।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (उत्तर प्रदेश): सभापति जी, मैं एक बात कहना चाहूंगा। वहां के बारे में मंत्री महोदय ने माना है कि कुछ काम हुआ है, लेकिन जो काम हुआ है, वह पर्याप्त नहीं है। मैं उनसे इतना निवेदन करना चाहूंगा कि समय निकालकर वे खुद वहां जायं, अपने सहयोगी श्री चव्हाण को भेजें, क्योंकि जब तक वहां जाकर लगातार जांच-पड़ताल नहीं होगी तब तक स्थानीय अधिकारियों के भरोसे इस चीज को नहीं छोड़ा जा सकता है। यह राजनीतिक प्रश्न नहीं है, यह मानवीय प्रश्न है। इसमें कोई संदेह नहीं है सरकार करना चाहती है, जो कुछ करना चाहिये वह हुआ या नहीं, इसकी जांच-पड़ताल जरूरी है वरना सद्इच्छा होते हुए भी वहां पर काम नहीं हो सकेगा।

श्री जगजीवन राम : मैं यह भी बतलाना चाहता हूं कि मैंने यह काम सिर्फ वहां के स्थानीय अधिकारियों के ऊपर ही नहीं छोड़ा है। हमारे यहां के जो डायरेक्टर जनरल हैं और जो एक अच्छे अफसर हैं, उनको वहां पर दो-तीन बार भेजा है और उन्होंने सब चीजों को देखा है।

SHRI DAHYABHAI V. PATEL: It is the general feeling of the Government as well as the Opposition that the people of Khemkaran braved very serious situations and the very fact that they had to come here all the way to Delhi to represent their difficulties is itself a sad commentary on the way in which the Government machinery is moving. The hon. Minister has more or less admitted that. Now, since we are adjourning in two days, may I request the hon. Minister through you to give us a statement of the facts, whether what the hon. Member behind me has stated is true or whether what the hon. Minister is trying to tell us is true. As to what is the correct position, we would like to know before we adjourn, Sir.

SHRI JAGJIVAN RAM : I have just now asked the Deputy Minister who has got the information to give the details as to how many persons have been given grants and loans. That figure we have got. But we will collect further information. I will send the information to the hon. Member.

SHRI DAHYABHAI V. PATEL: This has been contradicted. We may have the statement to check, let us have it within two days. We do not want to want it immediately but before we adjourn. Would he do it ?

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: It is a serious situation. If the issue of rations has been stopped, then how can the uprooted persons live? And the Minister has exressed surprise that this allegation has been made.

SHRI JAGJIVAN RAM: I mysell it because my information is that the shops have been opened, that the provisu> available there. But still since the hon. Member persists that my information is wrong and his information is correct, I will look into that and see whether there justification for making that statement.

شری عبدالغنی (پنجاب) : کیا وزیر صاحب فرمائینگے که ان کے علم میں یه بات ھے که پاکستانی جو لاکھوں من گندم وھاں پر چھوڑ گئے ھیں وہ وھاں پر اسٹاک میں پڑا ھوا ھے - اگر اسٹاک میں پڑا ھوا ھے تو کیا سرکار اس بات پر فوراً وچار کرے گی که فوراً اس گندم کو افسروں کے ذریعه کھیم کرن کے بھائی بہنوں کو تقسیم کرا دیا جائے -

†[श्री अब्दुल गनी (पंजाब) : क्या वज़ीर साहब फरमायेंगे कि उनके इल्म में यह बात है कि पाकिस्तानी जो लाखों मन गन्दम वहां पर छोड़ गये हैं वह वहां पर स्टाक में पड़ा हुआ है। अगर स्टाक में पड़ा हुआ है तो क्या सरकार इस बात पर फौरन विचार करेगी कि फौरन उस गन्दम को अफसरों के जरिये खेमकरण के भाई-बहनों को तकसीम करा दिया जाये']

श्री सभापति : गेहूं पड़ा है ?

شری عبدالغنی : گورنمنٹ کے قبضه میں ھے جو پاکستانی لاکھوں من گندم چھوڑ کر چلے گئے تھے - وہ اس سمے گورنمنٹ کے قبضه میں ھیں-

†[श्री अब्दुल गनी : गवर्नमेंट के कब्जे में है जो पाकिस्तानी लाखों मन गन्दम छोड़ कर चले गये थे। वह इस समय गवर्नमेन्ट के कब्जे में हैं।]

श्री जगजीवन राम : यह सवाल इस समय नहीं है कि वहां पर गेहूं पड़ा हुआ है। इस समय तो सबसे मुख्य सवाल यह है कि वहां के लोगों के लिए खाने और पहिनने की चीजें मुहय्या हुई हैं या नहीं और इसका सवाल ही पैदा नहीं होता है कि कहां से लाना है और कहां से देना है। हमारे सामने तो सवाल यह है कि उन्हें सामान देना है और उसका इन्तजाम करना है। अगर उसका इन्तजाम नहीं है तो उसके लिये जल्द से जल्द इन्तजाम करना है।

شری عبدالغنی : میں یه عرض کر رھا تھا که کیا یه صداقت ھے که لاکھوں من گندم گورنمنٹ کے اسٹاک میں پڑی ھے جو پاکستان سے ھم نے لیا تھا ؟

†[श्री अब्दुल गनी : मैं यह अर्ज कर रहा था कि क्या यह सदाकत है कि लाखों मन गन्दम गवर्नमेन्ट के स्टाक में पड़ी हुई है जो पाकिस्तान से हमने लिया था।]

श्री जगजीवन राम : यह सवाल दूसरे मंत्री से पूछना होगा।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : लाखों मन नहीं हो सकता।

II. SURVEY MISSION OF PROF. BRYSON OF THE UNIVERSITY OF WISCONSIN (U.S.A.)

SHRI M. P. BHARGAVA (Uttar Pradesh): Sir, I beg to call the attention of the Minister of Transport, Aviation, Shipping and Tourism to the Survey Mission of Prof. Bryson of the University of Wisconsin (U.S.A) who came to India recently.

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF TRANSPORT AND AVIATION (SHRIMATI JAHANARA JAIPAL SINGH): Sir, for some time past, Indian meteorologists had been observing that large quantities of dust were carried

f[ ] Hindi Transliteration.